आई0बी0ए0 2500 पी0पी0एम0 से उपचारित कर मौस से ढकने के उपरांत काली प्लास्टिक से दोनों तरफ कसकर बाँध देते है। मौस की नमी बनाई रखी जाती है। लगभग 6 माह में रूटिंग प्राप्त हो जाती है। रूटिंग का प्रतिशत कम होने के फलस्वरूप एफ0आर0आई0, देहरादून द्वारा गूटी बाँधने की नई उन्नत तकनीक जिसे वायर तकनीक कहा जाता है, विकसित की गयी है। इस विधि द्वारा छाल गोलाई से नही निकाली जाती है बल्कि प्लास्टिक कोटेड तार (2 एम0एम0व्यास) से लीडिंग शूट के चारों तरफ टाईट करते है जिससे हल्का व स्पष्ट घाव बन जाय। इसके उपरांत आई0बी0ए0 2500 पी0पी0एम0 से उपचारित कर मौस से ढक कर काली पॉलीथीन से दोनों तरफ बाँध देते हैं।

समयबद्ध कार्यक्रम

क्र.स.	कार्य	वर्ष	माह
1	स्वस्थ वृक्षों का चयन	–	कभी भी
2	स्वस्थ्य पौधों से बीज प्राप्त करना	प्रथम	फरवरी
3	बीज बुआई	प्रथम	मार्च–अप्रैल
4	अंकुरण के पश्चात पौधों को प्रत्यारोपित करना	प्रथम	सितम्बर
5	रोपण कार्य	द्वितीय / तृतीय	जुलाई–अगस्त

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

1– मुख्य वन संरक्षक, जैव विविधता संरक्षण विकास एवं अनुसंधान, हल्द्वानी
मो0 9412076135,05946–234047
2– वन संरक्षक, अनुसंधान वृत्त, हल्द्वानी
मो0 9411107617,05946–235136
3– वन वर्धनिक, पर्वतीय, नैनीताल
मो0 09411102358,05942–236270

उत्तराखण्ड वानिकी अनुसंधान संस्थान, रामपुर रोड, हल्द्वानी-263139

D.K. Press, HLD#9719915597,05946-225208

अनुसंधान पत्रक 3/2011-12

बुरांश

(Rhododendron arboreum)

पौध प्रवर्धन प्राविधि

उत्तराखण्ड वानिकी अनुसंधान संस्थान, हल्द्वानी
वन विभाग, उत्तराखण्ड

बुरांश

(Rhododendron arboreum)

परिचय

बुरांश उत्तराखण्ड का राज्य वृक्ष है। यह उत्तराखण्ड के हिमालयी क्षेत्रों में 1500 मीटर से 2500 मीटर ऊँचाई तक पाया जाता है। यह सामान्यतः बॉज, मिश्रित एवं चीड़ वनों में पाया जाता है। पुष्पण काल (फरवरी–मार्च) में यह वृक्ष बहुत मनोहारी लगाता है। इसके फूल से जूस, चटनी, जैम आदि बनाये जाते हैं जिनका स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान होता है तथा यह ग्रामीणों को रोजगार भी प्रदान करता है। बुरांश के प्राकृतिक वास –स्थलों पर विकास की गतिविधियों के कारण प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। अतः इसका संरक्षण तथा वृक्षारोपण द्वार संवर्धन करना आवश्यक है। फलियॉ शीतकाल में परिपक्व हो जाती हैं तथा बीज माह फरवरी में एकत्र करना चाहिए।

प्रवर्धन प्राविधि

बुरांश का प्रवर्धन बीज द्वारा एवं एफ0आर0आई द्वारा विकसित वायर तकनीक/एयर लेयरिंग (गूटी) द्वारा किया जाना सफल पाया गया है। वृहद स्तर पर पौध उत्पादन बीज द्वारा किया जा सकता है।

बीज द्वारा पौध तैयार करना

उच्च गुणवत्ता के बीज प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम मध्य आयु के स्वस्थ्य व रोग मुक्त वृक्षों का चयन किया जाता है तथा इन्ही वृक्षों से बीज एकत्र किया जाता है। इसका बीज शीतकाल में परिपक्व होता है तथा फलियों को माह फरवरी में एकत्र कर खुली धूप में एक सप्ताह तक सुखाते हैं जिससे बीज बाहर आ जाता है एवं साफ बीज एकत्र कर लिया जाता है। इसका बीज अत्यन्त बारीक होता है। मार्च–अप्रैल

में शेड हाउस में बुरांश क्षेत्रों की स्टेरेलाइज्ड ह्यूमस + मिट्टी (1:2) में बीज बोना चाहिए तथा बारीक मिस्टिंग से सीड बेड को नम रखा जाना चहिए। उच्च आर्द्रता (80% से अधिक) व 180°C से 24°C के तापमान पर अच्छा अंकुरण प्राप्त होता है। अंकुरण प्राप्त होता है। अंकुरण अवधि 35–60 दिन पाई गयी है तथा 20 जून तक अंकुरण लगभग 80 प्रतिशत पूर्ण हो जाता है। एक ग्राम बीज में लगभग 15000 बीज पाया जाता है तथा अंकुरण लगभग 70 प्रतिशत पाया जाता है।

पौध प्रत्यारोपण

धीमी वृद्धि होने के कारण 6 माह के उपरांत जब अंकुरित पौधे 3–4 पत्ती की स्टेज पर होते है, प्रत्यारोपण सावधानीपूर्वक 300 सी0सी के रूट ट्रेनरों या 9"× 6" के पॉलीथीन बैग में माह सितम्बर–अक्टुबर में किया जाता है। जो अंकुरित पौधे छोटे रह जाँय उनका प्रत्यारापेण माह मार्च–अप्रैल में किया जान उचित होगा। प्रत्यारोपण का कार्य शेड नेट में ही करना चाहिए तथा अगले वर्षाकाल में खुले स्थान में स्थानान्तरित करना चाहिए। पाटिंग मीडियम में बुरांश क्षेत्रों का ह्यूमस मिलाने से अच्छा परिणाम प्राप्त होता है। फील्ड रोपण हेतु 2 से 3 बर्ष की पौध उपयुक्त रहती है।

एफ0आर0आई, देहरादून द्वारा विकसित एयर लेयरिंग/वायर तकनीक (गूटी) द्वारा पौध तैयार करना

एयर लेयरिंग का कार्य माह मार्च –अप्रैल में करना चाहिए। पारम्परिक गूटी विधि द्वारा दो वर्ष की लीडिंग शूट की गॉठ से उपर 1 इंच तक छाल गोलाई में काटकर